अन्तरा-शब्दशक्ति

मुट्ठी भर मोती

काव्य संग्रह

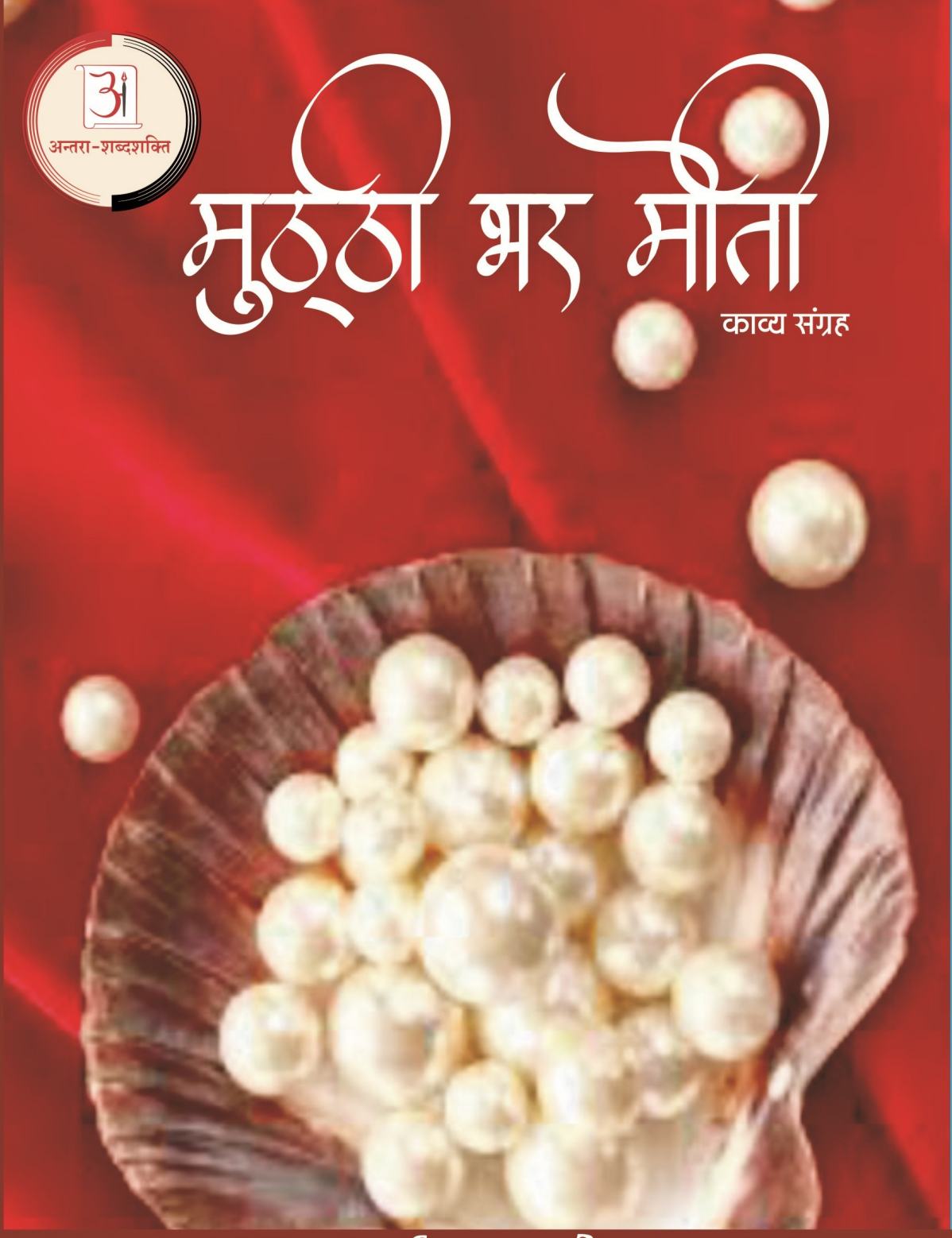

अर्चना कटारे

मुट्ठी भर मोती

(काव्य संग्रह)

अर्चना कटारे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-97-0"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- अर्चना कटारे
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
MUTTHI BHAR MOTI BY ARCHNA KATARE
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

अनुक्रमणिका

	मन की बात	5
1.	हे माँ शारदे	7
2.	उठ जाओ	8
3.	चाय हमारी निराली है	10
4.	कोख से बेटी की पुकार	11
5.	पैसा हाय पैसा	12
6.	आना होगा महाकाल	13
7.	चुनाव पर (मुहावरों का प्रयोग)	14
8.	पीपल बरगद का वृक्ष	15
9.	ऋतुराज बसंत	16
10.	बहन की पाती	17
11.	मत करो घमंड	18
12.	भारत माँ से प्यार करो	19
13.	आम का वृक्ष	20
14.	नारियल और दूल्हा अंधा सौदा	21
15.	धरती माँ की पुकार	22
16.	प्यारी माँ	23
17.	पक्षियों का पलायन	24
18.	कली का दु:ख	25
19.	जीवन चक्र	26

20. हिंदी पटरानी बन गयी 27

21. श्रद्धांजलि 28

22. नौ दिन 29

23. जिन्दगी 32

24.

मन की बात

ईश्वरीय अनुकंपा एवं आप सभी स्नेहीजनो के आशीर्वाद के कारण ही है जो मैं अपना दूसरा काव्य संग्रह **मुट्ठी भर मोती** प्रस्तुत कर रही हूँ।

मेरी पहली काव्य संग्रह अश्रु बिन्दु को आप सभी का बहुत आशीर्वाद मिला जिससे मैं दूसरा काव्य संग्रह संकलित करने में सक्षम हुई।

समाज की दशा बेटियों पर हो रहे अत्याचार ,पढी लिखी सक्षम को भी दहेज देने की प्रथा से मन को अशांति होती है किस तरह से ये सब बंद हो...।

दोनों काव्य संग्रह में समाज ,देश,परिवार और खुद को साकारात्मक दिशा देने की कोशिश की है, जिसके माध्यम से लोगों को नई दिशा मिले और देश उन्नति की ओर अग्रसर हो सकें। समाज की कुप्रथा और बेटियों पर अनाचार होते देख मन विचलित हो उठता है, आखिर क्यों लोग इन बच्चियों तक को नही छोडते।

मुझे धर्म शास्त्र और धर्म पर पूरा भरोसा है। पर अंधविश्वास को कोई भी स्थान नहीं। धर्म हमको जीने का तरीका सिखाता है और विज्ञान हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

सैनिकों के लिये मन में बहुत इज्ज़त होती है ,खुद कैसी कैसी तकलीफें सहते हैं हमारे लिये और हमारे देश के लिये,मुसीबतों से लडकर हमको चैन की नींद सुलाते हैं। मैंने बहुत सी कविताएं अपने वीर सैनिकों और उनके जज्बे एव उनकें परिवार पर लिखीं हैं।

कहते हैं लगन सच्ची हो तो कोई न कोई राह मिल जाती है....मैं लिखती तो थी पर डायरी और पन्नों तक सीमित था। पत्रिकाओं और पेपर में लिखते लिखते वह भी बंद सा हो गया फता ही नहीं चला। परन्तु अन्तरा शब्दशक्ति के माध्यम से मुझे नयी पहचान मिली एवं कलमकारा का सम्मान मिला।

इसके साथ ही एन डी टी.वी.द्वारा भारत माँ से प्यार करो काव्य का प्रसारण किया गया। जिससे मुझे और आगे बढने की प्रेरणा मिली।

5 जनवरी 2019 को मेरी पहली काव्य संग्रह अश्रु बीन्दु का विमोचन होना और विश्व हिन्दी पुस्तक मेंला प्रगति मैंदान मे मेरी पुस्तक अंतरा के स्टॉल पर रखा जाना मेरे लिये बहुत ही गर्व की बात थी और रहेगी।

प्रीति जी की मैं हमेंशा आभारी रहूंगी जिन्होंने हम जैसे नव अंकुरो को नयी दिशा दी, और अंतरा परिवार के सदस्या के रूप बहुत खुशनसीब हूँ

यहाँ का हर सदस्य हीरा है। प्रीति जी ने मेरे मन के बिखरे हुऐ मोतियों को मुट्ठी में समेट कर माला के रुप में पिरोकर व्यवस्थित कर दिया।

आप सभी हम पर अपना आशीर्वाद, स्नेह और कृपादृष्टि बनाये रखेंगे, जिससे मैं और अच्छा लिख सकूँ.....!

अर्चना कटारे
शहडोल (म.प्र)

हे माँ शारदे

ज्ञान देना मान दे माँ, विद्या का भँडार दे माँ,
नव गति नव ताल दे माँ, बुद्धि में निखार दे माँ,

कलुषित विचार गर आये, उनको तुम हर लेना माँ,
हो रहीं हो गल्ती अगर, तुरन्त हमें रोक देना माँ,

मौसम में बसँत छाये, सबका जीवन महका दो माँ,
खुशयाँ हर घर में आये, कडवाहट सब घुल जाये माँ,

दुखौं का नाश करो माँ, शिक्षित हर वर्ग करो माँ,
अहंकार को दूर करो माँ, जन जन का कल्याण करो माँ,

शब्दों में अनुभूति देना दे माँ, भावों का विस्तार दे माँ,
लोकरंजन कल्पनाओं को, गीत का संसार दे माँ,

अमृत भरे हर शब्द में माँ, ऐसी विचार शक्ति दे माँ,
भूल रहे हों जो कर्म की राह उनको सही दिशा दे माँ,

जीवन की जो सच्ची शिक्षा हो, वह हर सीख दे माँ,
भ्रमितों को सत्य की राह दे माँ, हर शब्दों में ज्ञान का भंडार भरो माँ

भूल रहे हों जो अपना पथ, उनको सही राह देना माँ,
जीवन की हर डगर पर, उनका साथ देना माँ!

उठ जाओ

बंद आँखो से सपने देखने वालों,
आलस छोडो, नैनो को खोलो,
सपनों को साकार करो,,,
नया दिन, नया सबेरा
बीत गये सब दुखों का घेरा,
नयी उमँगे,नयी स्फूर्ति
ले कर आयी तुम्हें जगाने,

फुदक रही हैं, चिडिया डाली पर,
कोयल भी अमुआ पर कूक रही,
मुर्गा भी बाँग दे रहे मुँडेर पर,
मोंरनी भी नाच रही,
बंदर उछल कूद कर रहे डाली पर,
योगी भी ध्यानस्थ हो गये,
नील गिरी के हिम शिखरों से,
ठंडी ठंडी हवाएं चली,
वसुंधरा मखमली हरी चादर ओढे,
पुलकित हृदय उल्लास हुऐ,

खेतों की फसलें लहलहाती देख,
किसान भी खुशियों से झूम रहे,
सरसों फूली अरहर फूली
धरती की छाती फूल रही,
पत्तों पर ओश की बूँदें जमकर,
मोती सी चमक रही,
फूलों की कलियाँ चटक कर,
अपना यौवन बिखेर रही,

बीती रात कमल दल सिमटे,
भोर भये मुस्कुरा खडे,
भौरे भी आ गये गुँजन करने,

तितलियां भी मंडरा रही,
दोनो हाथ पसारे प्रकृति मानो ,
स्वागत को तैयार खडी,
नन्हें नन्हे बच्चे किलकारी मारे,
मँदिर के घँटिया बज रही,
जागो जागो तुम भी जागो,

बँद आँखों से सपने बुनने वालो,
खुली आँखो से सपनों को साकार करो,
हौसला रख विश्वास जगाकर,
हाथ जोड प्रभु को नमस्कार करो,
निद्रा छोडो,बिस्तर छोडो,
आलस का भी त्याग करो,
सपनों को हकीकत में बदलने
हो जाओ तैयार खडे,..!

चाय हमारी निराली है

चाय नहीं ये प्यार है
सँग सँग बैठने की तैयार हैं
कुछ कहने सुनेने को दिल बेकरार है,

शक्कर कम डाली है
प्यार हमारा ज्यादा है
चीनी ज्यादा हो जायेगी, डाबिटीज हो जायेगी,

अदरक तुलसी कूटकर
अहंकार को पीसकर, बैर भाव को छानकर
नम्रता की प्याली है चाय हमारी निराली है

गरम गरम भाप निकलतीं
ठँडी हमारी दूर भगाती
प्यारी बिटिया को जगाती, चाय सँग बिस्किट लाती

अलसायी सी बिटिया कहती
मम्मी इतनी जल्दी क्यों ले आती
पापा कहते देर क्यों करती, दादा दादी राह देखते

सब मिलकर चाय पीते
खुशी आनंद की बर्षा होती
कुछ देर ही साथ बैठते, दिन की अच्छी शुरूआत करते

चलो शाम को भी चाय पी लें
दिन भर के सुख दुख कह ले
अपनों सँग बैठकर चाय का आनन्द ले लें

कोख से बेटी की पुकार

रोती बिलखती,पेट में कह रही कन्या।
माँ मुझे एक बार जन्म तो लेने दो।।
मेरी क्या गलती है इतना तो बताओ
एक बार जन्म लेने का हक तो दिलाओ

माँ रोती रोती कहती बेटी से..... कैसे तुझे बताऊँ
एक बेटी पहले से है,.. दूसरी कैसे लाऊँ?

बेटी तुझे नहीँ मालूम,समाज मैं फैला है रोग।
बसे है समाज में कई तरह के ल़ोग।।
तेरे बडे होने पर माँगेगे,थैला भर भर नोट।
कहाँ से लाऊँगी ये हजारों के नोट।।
जलती हैं मरतीं है,समाज में बेटियां।
दुनिया के लोग इसमें सेकते हैं रोटियां।।
मैं तो बस विद्या दे सकती हूँ, कहाँ से लाऊँगी लाल हरे नोट।

बेटी सिसक सिसक कर कहती है.....

माँ मुझे एक बार जन्म तो लेने दो....
आपका नाम रोशन करूँगी, पढ लिख कर इन्सान बनूँगी..
चाँद तारोँ को छुऊँगी, बेटों से ऊँचा बनूँगी.....
डा.,ईजी. या वैज्ञानिक बनूँगी, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बनूँगी..
आकाश हो या पाताल सब क्षेत्र सम्भालूँगी.....
समाज में फैला भ्रष्टाचार मिटा दूँगी.....
दुनिया भर की भ्रांतियां मिटा दूँगी अपने क्रांतिकारी विचारों से,.
आपके आँचल तले माँ, सँसार लाकर रख दूँगी....
माँ मुझे एक बार जन्म तो लेने दो.....
माँ मुझे एक बार जन्म तो लेने दो.....

पैसा हाय पैसा

आज पैसा के पीछे कितना भाग रहा मानव।
मानवता को छोड, इन्सान बन रहा दानव।।
तेरे मेरे के पीछे कब तक भागेगा मानव।

सत्य ,अहिंसा ,धर्म को छोड.....
पैसोँ को ही भगवान मान रहा मानव।।
पैसों के पीछे इन्सानियत छोड....
लोग बन रहे चोर और डाकू।।
युवा भी कम नहीं ,बात बात पर दिखाते हैं....
बन्दूक और चाकू।।
कर्तव्यों को भूल, पैसों के पीछे भाग रहा इन्सान।
जैसे पैसा हो गया भगवान।।
राजा और महराजाओं के भी बन गये चबूतरे।
उनकी कब्रों पर भी उड रहे कबूतर और तीतरें।।
उनके महलों में भी जगमगाते थे फानूस।
टूटती दीवारों और कब्रों से...
कुछ तो करो महसूस!
उनके महलों की देखते बनती थी चित्रकारी।
जिसनें हमको तुमको बनाया
उसकी देखो कारीगरी।
राजाओं ने भी धन और ऐश्वर्य के नाम से खेली होली।
अँत में रह गयी उनकी भी खाली झोली।।
पैसा ही सब कुछ नही जीवन में.....
जिसनें जीवन दिया.....वही रक्षा करेगा आगे जीवन में.....!

आना होगा महाकाल

हे ओमकालेश्वर, हे महाकालेश्वर, कलयुग में इतना उपकार करो
जो हो रहे अत्याचार उनका तुम सँहार करो

हे सोमनाथ, हे विश्वनाथ, हे दीनानाथ इतना सा ही काम करो
जिऩने बच्चों को अनाथ किया, उनका तुम नाश करो

हे बैद्यनाथ, हे केदारनाथ हे भोलेनाथ बस इतना सा
उपकार करो बहन ,बेटी को सम्मान दिला दो
उसका न तिरस्कार हो

हे रामेंश्वर,हे नागेश्वर, हे भीमेंश्वर
सुन लो मेरी करूण पुकार प्रभो
भ्रूणहत्या और दहेज प्रथा का कर देना अंत प्रभो

हे त्रयंबकेश्वर, हे घुमेंश्वर हे नीलकंठ हरे
दुनियाभर के कष्टों को क्षण में दूर करो

हे त्रिनेत्र धारी, हे डमरूधारी, हे त्रिशूल धारी,
फिर से रौद्ररूप धारण कर ताँडव करो
हो रहे आतंकी हमले इनका भी नाश करो
हाँथ जोड प्रभु विनती करती न लायी पूजा की थाल प्रभु
कण कण की रक्षा करने वाले मेरी भी अरज सूनो
एकबार फिर आतातईयों से रक्षा करने, तुमको आना ही होगा
अपने मंदिर और भक्तों की रक्षा का वचन फिर निभाना होगा

चुनाव पर (मुहावरों का प्रयोग)

गली गली द्वारे-द्वारे, झंडा बेनर लेकर निकले प्यारे,
चल रही नेताओं की टोली, चमचे घूमें आगे-पीछे,
कुत्ते जैसी दुम हिलाते, एक ही थाली के सब चट्टे-बट्टे,
अपने मिंया ही मिट्ठू बनते,मुँह में राम बगल में छुरी रखते,
झूठ छलावे की बातें करते, मृग मरीचिका से सपने दिखाते,
असलियत से कोशों दूर रहते, करनी कथनी सब में अंतर,
जुवान चलाते बित्ता भर की. चुनाव के बाद नौ दो ग्यारह होते,
एकाध नेता अच्छा आता, सब उसी की टाँग खींचते,
जनता दिल पर पत्थर रखती, अन्तर्मनमें पीडा होती,
कोई नेता तो अच्छा आये, दुश्मन के दाँत खट्टे कर जाये,
बदला चुन चुन कर ले ले. अपनी जाँन की परवाह किये बिन,
अपने प्राणों तक की आहुति दे दे, सभी अपनी ढपली अपना राग सुनाते,
देश की परवाह कोई न करते, पैसा सब अपनी जेब में भरते,
कुछ नौ दो ग्यारह हो जाते, कुछ तडीपार बन जाते,
ये हाँथों किसी के न आते, जब पकडे जाते तब,
जेल की चक्की पीसते, अब भी पक्की सोच विचार कर लो,
सच्चा देश का सेवक चुन लो, अब अपने अन्तर्मन की ही सुनना,
नेताओं के बहकावे में न आना, कान के कच्चे कभी न बनना,
हमेंशा राष्ट्रहित और देश हित की ही सोचना!

पीपल बरगद का वृक्ष

सूखे ठूंठ बरगद,पीपल से सीखो मुसिबतों से लडना,
एक एक पत्ता साथ छोड दे फिर भी हार कभी न मानना,
अपने भी साथ छोड दें तो हौसला बनाये रखना
जिन्होंने साथ छोडा चर-चर होकर
पैरों तले दबते गये, कुचलते गये
कभी झाडकर, जला कर.राख तक बना दिये गये
नहीं तो आंधी तूफानों संग उडते उडते गये
अनजान जगह पहुंच गये
डालियों ने कभी साथ न छोडा, आंधी तूफान ओलों को झेला,
पर साथ अपनों का कभी छोडा, सुख दुख हंसकर बांटा
समय पाकर फिर से वो मुस्कुरा उठीं
नयी नयी कोपलें फिर से निकली
ठूंठ ने फिर से स्वागत किया
पक्षी फिर से कलरव करते
राही बैठ कर राहत की साँस लेते
फिर वही पत्ते सभी को छाया देते
वृक्ष अपनी जडें और मजबूत करते
हर किसी को यही सीख दे रहे
मुसीबतों से लडना सीखो, अपनी जगह बनाये रखो,
पत्ते ये बाहरी सौंदर्य हैं आत्मा हमारी जड है
बस इसको मजबूत रखो
अपने व्यवहार, तप, लगन, विश्वास, श्रद्धा,
ये सब जडें है मजबूती देने के लिये
मूल हमारी आत्मा जो गहराई तक जाती है
पूरे बृक्ष को मजबूत बनाकर पूजनीय बनाती है
सुख दुख के साथी कौन भली भाँति बतलाती
संकट समय में कौन खडा था याद वह दिलाती

ऋतुराज बसंत

कुहू-कुहू कोयल बोले अमुआ के पेड में,
लद गयी बेरें बेरों के पेड में
आ रही बौरें देखोअमुआ के पेड में,
लगता है ऋतुराज बसंत की आयी बहार है....

फूलों की बिछ गयी देखो कतारें हैं,
पीली सरसों,पीले गेंदे,और सूरज मुखी लायी बहार है,
लगता ऋतुराज बसँत की आयी बहार है.....

चनाबूट और गेहूं की फलियां भी मस्त लहरायी हैं,
अपने यौवन देख मँद मंद मुस्कुरायीं हैं,
लगता है पिया मिलन की आज छायी बहार है....

अरहर, उडद, मूँग, मटर की फलियाँ
मस्त दानों से भर आयीं हैं
लगता खेतों में आज इनकी गोद भरायी है

ठंडी हवा फिर चली पुरवाई है,
कहीं पानी,कही ओले ,कही धूप की लुका छिपाई है
लगता है ऋतुराज बसँत की आयी बहार है....

अंबर ओड रही है पीली चुनरिया
धरा पहन रही धानी घंघरिया
नयी कोपल निकल आयीं हैं
लगता है ऋतुराज बसँत की आयी बहार है

प्लास ,टेशू, गुलमोंहर में छायी बहार है,
धूप भी गुलाबी है आयी है
लगता है ऋतुराज बसँत की आयी बहार है.....

बहन की पाती

भेज रहीं हुं राखी तुमको,रक्षा बंधन का त्यौहार है,
बचपन में जो प्यार बांटा ,उसी का त्यौहार है,
हर बहन की लाज बचाना, अगर सामने अकेली पड जाये वो,
हिम्मत से साथ देना, दुआ देगी जीवन भर वो,

हर बहन बेटी में मुझको देख कर, कलाई आगे कर देना तुम,
अपनापन व विश्वास मिलेगा, अकेले नहीं रह जायेंगे हम,
बहन भाई को टीका लगाकर, उसका मान बढायें हम,
बहनों के पैर छू कर, सुख सौभाग्य ले जाना तुम,

सुख दुख में साथ निभाना, ये बचन न भूल जायें हम
खून के रिश्ते होते हैं, इनको न भूल जायें हम
इस पवित्र बंधन को,पैसों से मत तोलो, लेन देन का व्यपार नहीं,
दुनिया में सब रिश्ते से ऊपर भाई बहन जैसा कोई प्यार नहीं,
हल्दी, कुमकुम, अक्षत लेकर ,आरती का थाल लिये,
है पतला सा रेशम का धागा, गॉठ न पडने देंगे हम,
है ये कच्चा रेशम का धागा, मजबूत है सब बंधनों से,,
हर पल भैया की लम्बी उमर मांगे, दुख का कभी न साया हो

मेरे भैया सुख से रहना, बस राखी में आ जाना तुम,
साडी, कपडे, गहने, मीठा, ये सब मत ले कर आना तुम,
हो सके तो राखी पर, आशीष देने आ ही जाना तुम
रक्षाबंधन की राह देखती, भैया जल्दी से आ ही जाना तुम,
भाभी को भी साथ देख कर, खुश हो जायेगा मन,
चुन्नु ,मुन्नु को साथ देख कर,बचपन की यादें ताजा कर लेंगे हम,

तुम्हारी बहन

मत करो घमंड

मत करो घमंड अपने पैसों का ताकत का,
मत करो घमंड सुंदरता और यौवन का,
मत करो घमंड अपने बेटे बेटी का,
मत करो घमंड अपने खानदान और रिस्तेनातों का
मत करो घमंड अपने दिखावे और रूतबे का,
मत करो घमंड अपने हैसियत और तजुर्बे का,
चंद दिनों की चकाचौंध है, सब यहीं पडे रह जाना है,
जिस दिन घमंड का अंकुर फूटे, एक चक्कर लगा आना शमशान का,
सभी के रूतबे, हैसियत, दिखावे,
सब जल गयी, बची राख बनके,
कितनों ने अपना दबदबा दिखाने में,
मजबूर किया था दासता स्वीकार ने में,
धोखा दिया था भाई ने भाई को, मौत के घाट उतारा बाप तक को,
दबी कब्रों में उड रहे कबूतर और तीतर,
कभी कभी जम घट लगाकर बैठ जाते हैं कुत्ते,
घमंड किया था किस बात का...
हाड,माँस और चमडी का....जल गये सब धू धू हो कर...
कर गये होते अपने शरीर का दान....
आज कोई और जी रहा होता शान से....
न होता मजबूर बिना आँखों के...
देख रहा होता आज वो आपकी आँखों से...
धडक रहा होता किसी कि दिल....आपकी धडकनों से....
कर गये होते अंगदान.....बच सकती थी जिन्दगी किसी की...
मरने पहले बस दे दो रजामंदी.. करना है तो घमंड करो कि मेरे बाद भी...
उपयोग करे धन दौलत नहीं मेरे अनमोल शरीर का,
जो किसी के काम आया..

भारत माँ से प्यार करो

जय करो जय कार करो,पर भारत माता से प्यार करो,
पशुता छोडो अश्लीलता छोडो, पर भारत माता से प्यार करो।।

वीर शहीदों के बलिदानों को,... तुम न यूँ बर्बाद करो,
वीर भगतसिंह, सुखदेव, बापू, इनके बलिदानों को याद करो,
सब धर्मों का स्वागत कर,अपनी संस्कृति का गुणगान करो,
सब धर्मों को नमन कर, इस 'एकता' से प्यार करो,
राम कृष्ण की जन्मभूमि है, इस पर तुम अभिमान करो
गँगा, जमुना, नर्मदा माँ यहाँ हैं, इस पर भी तुम गर्व करो,
ईद, दिवाली साथ मनाते, इन त्योहारों का सम्मान करो,
इस धरती पर तुमने जन्म लिया, तुम इसका सम्मान करो,
अमन, शान्ति का वातावरण रहे, तुम इसका भी प्रयत्न करो,
हर खेत से सोना उगले, तुम इस पर भी कर्म करो,
हर घर आँगन में खुशियां आये, तुम इस पर भी यत्न करो,
हर बच्चा पढ लिख कर इन्सान बने, तुम इसका निर्माण करो,
जय करो जय कार करो...पर ,भारत माता से प्यार करो,

दुख, दारिद्रय, शोषण और कुपोषण, इनका तुम पहले नाश करो,
अखण्ड भारत के सपनों को, तुम फिर से साकार करो,
मासूमों और निर्पराधों के खूनों से..., अपने हाथ न लाल करो,
मँदिर, मस्जिद और गुरूद्वारों को, तुम यूँ न बेहाल करो,
धर्म, जाति और आरक्षण, इनको बीच न लाकर राज करो,
स्मगलर, गुण्डे और ताकतवर, उन पर तुम राज करो,
भोली भाली जनता है, इनको न यूँ बर्बाद करो,
जय करो जयकार करो, पर भारत माता से प्यार करो!

आम का वृक्ष

नहीं चाह गुलमोहर बनूँ, न चम्पा,न चमेली बनूँ
न गुलाब, न ही मौल श्री बनूँ, न खुशबू से बागों को ही महकाऊँ...
रंग बिरगे छटा लिये... तितलियों को बुलांऊँ..
न ही अपने सिर भौंरो को गुँजारित देख..मन ही मन इठलाऊँ
काँटे चुभ जाने से... दिल किसी का न दुखाऊँ.....
न ही पुष्प तोड कर...देवों पर चढ जाऊँ....
न ही माला बन कर.... चिता पर सजायी जाऊँ...
हाँ तिरंगा मैं लपटकर ...वीरो की शोभा बढाऊँ...
पर मेरी तो अभिलाषा है...आम का वृक्ष बन जाउँ...
पथिक को छाया देकर... कुछ पल सकून के दे जाऊँ..
मीठे मीठे फल देकर तृप्त तो कर जाऊँ ...
अपने सदाबहार पत्तों से..ताजी हवा दे जाऊँ..
पूजा के लिये कभी कभी.. बँदनवारे बन जाऊँ..
ऊँची ऊँची डालों पर..खग के रेन बसेरा बनाऊँ...
सावन आते ही...झूले भी डाले जायें...
मस्त हो सखियाँ सावन गीत भी गायें.....
बोरे आ जाने कोयल भी मधुर तान सुनायें...
छोटी छोटी अमिंयों से बच्चे खुश हो जायें.....
अपनी सूखी लकडिय़ों से ....ईधन भी बन जाऊँ..
हवन करे मेरी लकड़ी से ...मन्दिर तक पहुंच जाऊँ...
उस सुगंधित धुऐ से वातावरण स्वच्छ कर जाऊँ...
बस इतनी अरज हमारी..बस देना रहे आदत हमारी...

नारियल और दूल्हा अंधा सौदा

दूल्हा देखना और नारियल खरीदना, दोनों ही अंधा सौदा
किसने देखा किसने जाना, नारियल जैसा हमने माना
खूब घुमाया, खूब बजाया, बाहर से बहुत सुन्दर ही देखा
अन्दर कैसा किसने जाना, खुश होकर के दाम चुकाया
अच्छा होगा हमने माना....हमने तो खूब बजाया ....
पर सडा निकला तो किस्मत पर रोना .....हमने तो भाग्य आजमाना

जटा छीलते हाथ थक जाते,
लडके वालों के चक्कर लगाते लगाते पाँव पिराते
जमीन पर पटकते नारियल फूटे,
गुलाबी नोट देते देते पसीना छूटे
बडी मुस्किल से गोला निकले, बिलकुल जैसे दूल्हा मिले
बडे आश्चर्य से सब देखे, कैसा किसका नारियल निकले

कुछ नारियल मलाई वाले और अच्छे निकले,
वैसे कुछ दूल्हे कमाई के साथ गुणवान निकले,
कुछ नारियल पके निकले, जैसे दूल्हा जैसे तैसे जिन्दगी गुजारते
सडे नारियल फेक दिये जाते, वैसे ही तलाक हो जाते
कुछ नारियल सहेज कर रख दिये जाते,
वैसे ही कुछ रिस्ते जिन्दगी भर साथ निभाते

नारियल और शादी में अनुमान लगाओ,
अपनी अपनी सब किस्मत अजमाओ
नारियल और शादी दोनों अंधा सौदा
किसने देखा किसने जाना, सभी को अपनी किस्मत आजमाना,

धरती माँ की पुकार

अपने ही देश का हाल देख रो पडी धरती माँ,
अपनी ही पैदावार देख रो पडी धरती माँ,
राम राज्य में एक का सौ करती थी,
न्याय, धर्म, सत्य था तो मैं ऐसा करती थी,
आज लोभी, कपट, झूठ का है बोलबाला,
तो मैं कहीं बाढ, कहीं सूखा और कहीं दे रही पाला,
दिखावा,बाहरी आडंबर, मिथ्या का है बोलबाला,
ऐसे में कैसे रहे किसान भोला भाला,
मुझको जहरीली दवाई और पाउडर का छिडकाव कर दे रहे बीमारी...
मुझसे अन्न ऊगकर तुम्हें देगा
कैंसर, ब्लडप्रेशर और कई तरह की बीमारी,
फलों को बडा करने के जोश में लगा रहे इंजेक्शन,
कल यही फल खाओगे तो... तुम्हें भी लगेंगे इंजेक्शन,
हर भरे वृक्षो को मत काटो...हमको भी होतीं हैं तकलीफें,
अगर हमको खुश रखना है बेटो... ये चार मंत्र अपनाओ बेटो
पहला मंत्र वृक्षो को लगायें,
दूसरा मंत्र खेतों को उपजाऊ बनायें,
तीसरा मंत्र जंगल में मत लगने दो आग,
चौथा मंत्र पेडों में डालो गोबर की खाद
पानी की हर बूंद बचाओ, गौ हत्या बंद कराओ
सभी लोग ये नारा लगाओ, हरित क्रांति वापस लाओ
जो इन बातों को आपनाये, अन्न धन सब मुझसे पाये

प्यारी माँ

हे माँ शायद तुमने आज के दिन इसलिए जन्म लिया
दुर्गा आदि शक्ति स्वरूपा जगदंबा ने भी जन्म लिया
नये साल में अपनों की आखों को नम करा दिया
यादें बस रह जातीं हैं जिन्दगी की जीने का तरीका सिखा दिया
हर परिस्थिति में सम रहो
जिन्दगी जीना है तो...कमल संग कीचड सा जियो
तन से काम मन से राम जपो
परमात्मा पर विश्वास रख
अपने काम उन पर सोंप दो
चौरासी लाख योनियां भोगने के बाद मनुष्य जन्म मिला
उस को न यूँ बर्बाद करो...
उनकी ये सीखें जब कडवी लगती थीं.....
अब ये शहद सी मीठी...
कितना सार छुपा था कथनों में...
अब होती तो कहती सुनती
और ज्ञान का भंडार खोजती
सब नासमझ बचपन में काँच समझ कर फेंक दिया...
ज्ञान से भरे हीरे मोंती...
कुछ ही शेष बची जिन्दगी
अब टिमटिमता दिया जल रहा...
हांथ लगाये संम्भाले बैठी
अब तो यादें ही शेष बची.....
जिन्दगी भी शेष रही..
गुणाभाग और घटा बढी में..
बीत रही अनमोंल घडी
दोनों ने ही नया साल चुना
अम्मा तुमने आने और पिता ने जाने में...
कितनी समानता दोंनों में शायद ईश्वर का मिलान रहा..

पक्षियों का पलायन

बहु मंजिलें और अट्टालिकायें तन रहीं
खेती की भूमि खत्म हो रही
आबादी दिनों दिन बढ रही
हरे भरे खेत नाश हो रहे
लाखों पेड कट कट कर सडकें चौडी हो रहीं
गाँवों में ही महुआ पलास दिख रहे
पूजा के लिये भी टेसू नहीं मिल रहे
रंग दे बसंती के गीत नहीं बज रहे
हवायें भी शुद्ध नहीं बह रही
इतने शोर गुल में....
चिडिया कोयल भी नहीं कूक रहीं...
मुर्गे भी बाँग नहीं दे रहे...
श्राद में भी कौए नहीं मिल रहे...
जैसे सब पलायन ले रहे...
दूर एकांत में जाकर बस रहे
जैसे कह रहे हो.....इन इंसानों को ही रह लेने दो.....
आसमान छूती बहु मंजिलों में
हम इन इंसान की बस्ती से दूर .....
अपना रैन बसेरा बना रहे ...
हम चैन से रहकर शान्ति में ...
अपना बसंत के गीत गा रहे
तिलती और मधुमक्खी भी चैन से मधुपान कर रही
वहां उसे छेडने वाला कोई इंसान मिला नहीं.....
तोता, मैना, गौरय्या भी खुश हैं
यहां बहेलिए और इंसानों की बस्तियों से दूर हैं

कली का दुख

एक सुमन ने एक कुसुम से, हँसते मुस्कुराते पूछा।
इतने सुंदर रँगोँ की छटा, तुम कहाँ से लाते हो।

इतना सुंदर मधु का प्याला, तुम कहाँ से पाती हो।
इतना सुंदर मखमली कपडा, तुम कहाँ से पाती हो।

इतनी सुंदर कटिंग और सैटिंग, तुम कैसे कर पाती हो।
रंग रगीली तितलियों को कैसे तुम लुभाती हो।

काँटों मेँ भी इतने सुन्दर, पुष्प कैसे तुम उगाती हो।
पुष्प गच्छों ने झुक कर, अधखिली कलियों को देखा,

उन कलियो ने भी पुष्प गुच्छों में, अपने यौवन को देखा।
कल मैं भी इन कलियो से, सुन्दर फूल बनूँगी।

काले काले भँवरे आकर, नयी तान सुनायेंगे।
तितलियां भी मधु रस पीकर, मदहोश सी हो जायेंगी।

अपने रुप, रंग और खुशबू से, सबको खुश कर जाउंगी।
तभी किसी लडके ने आकर, उसको बेदर्दी से नोचा।

रोती सिसकती रह गयी, उसको पैरों से रौंदा।
रूँधे गले से अपने आँसू पोंछा, सोचा मैं तो कली हूँ,

इन इन्सानो ने तो,,,,,नन्ही कलियों तक को नोचा

जीवन चक्र

भोर से पहले गौरैय्या जागी,
बच्चे छोड घरोंदे से निकली
खुद भूखी रह बच्चों को चुगाती,
दाना दाना चोंच में लेकर..
ममता वात्सल्य से भरकर...
धीरे बच्चों के मुख पे डाली...
माँ को आते ही चीं चीं कर
कुछ कहने लगते....
सब अपनी भाषा में कहते...
समय की गति से पँख भी आते....
नन्ही जानों को उडना सिखाती.....
प्रकृति की रीति निभाती...
आत्मनिर्भर होते ही खुद छोड देती...
हम इंसान तो मोह में फसते...
आखिरी साँस तक चिंता में घुटते....
यही है जीवन का ताना बाना..
माना सब यहीं रखा रह जाना.....
फिर भी सब ऐसा ही करते...
जीवन चक्र ऐसे ही चलता...
आज हम है, कल कोई और था,
कल कोई और होगा...
सत्य यही है ....
फिर भी बोध न होता...
कैसा है अज्ञानी जीवन....
कोई इससे निकल न पाता...
यही है जीवन का ताना बाना...

हिन्दी पटरानी बन गयी

बँगला, सिन्धी, फारसी, अँग्रेजी, उर्दू सब रानी बन गयी,
देखो हमारी हिन्दी पटरानी बन गयी,,,

ब से बिन्दी लगा कर
ह से हरवा पहन कर
च सेचूडी सजा कर
ल से लँहगा पहने
प से पायल छनका कर
म से मशहूर हो गयी
स से सिन्दूर लाल लगा कर
सदा-सदा के लिये सुहागिन बन,,,

त से तलवार ले
क्ष से क्षत्राणी बन
श से शक्तिशाली हो गयी
मेरी हिन्दी पटरानी बन गयी,,,

ह से हवन कर
द से दुशमनोँ को
र से राख कर रही
विदेशी भाषा से
सी से केट
डी से डाग, जानवर न बन कर

म से माता
प से पिता बता रही
ल से लक्ष्मी
स से सरस्वती, ज्ञ से ज्ञानी बना रही,

देखो हमारी हिन्दी सब भषाओं को छोड पटरानी बन गयी

श्रद्धांजलि

चुन चुन कर फूल ले आयी, हे ! भारत माँ तुम्हें चढाने को,
चारों ओर गद्दार खडे हैं..हे! माँ तेरा सीना छलनी करने को,

मंदिर मस्जिद के विवाद पर, दंगे खूब कराते हैं,

जनता को विवाद में फंसाकर, आपस में ही लडाते हैं,

कश्मीर पर बैठे सिपाही, रोज ही अपमानित होते हैं,
अपने ही देश की खातिर, आतंकियों से पत्थर तक खाते हैं,

चालीस जवान एक साथ शहीद होते, आँखों में खून उतारते हैं,
हाथों में बन्दूक होते हुऐ भी, कर कुछ भी न पाते हैं,

लाशों के चिथड़े बटोरकर, घर घर पहुँचाने जाते हैं,
चार दिन शहादत की बातें होती,फिर ठण्डे पड जाते हैं,

भाषणबाजी बहुत ही होती, फोटो भी खिचाते हैं,
थोडा बहुत अश्वासन देकर, दुबारा कभी न आते हैं

जिनके बेटा,पति, भाई, पापा गये, वही दुख जान पाते हैं
सीमा पर बैठे वीर सिपाही, हम तुमको शत शत नमन करते हैं

काश! भारत में भी दिन ये आ जायें, फूल बरसे सेना के हर जवानों पर,
हम पर मर मिटने वालों का, सम्मान हो हर गली चौराहे पर!

नौ दिन

नौ दिनो की नौ रूपो माता, आयी सबकी भाग्य विधाता

1. शैल पुत्री,
पहले दिन शैलपुत्री हैं माता,
योगीजनों की मूलाधार हैं माता,
बैल है इनकी सबारी,
कमल पुष्प और त्रिशूल धारी,
लाल वस्त्र पहन कर जाना,
लाल रंग का फूल चढाना,
शुद्धता करके कलश जलाना, घी से इनका स्नान करवाना।

2.बर्म्हचारणी
दूसरे दिन बरह्मचारणी की पूजा
तप मे इनके समान न दूजा,

चीनी का इनको भोग लगाये,
भर,भर झोली इनसे पाये,
कम्डल और माला लेतीं,
दुष्टों का सारा बल हर लेती,
नीले वस्त्र पहन कर करना पूजा, इनके समान कोई न दूजा।

3.चन्द्र घण्टा
मस्तक पर अर्ध चन्द्र का घण्टा,
तभी नाम पड गया चन्द्र घण्टा,
जब भी धनुष की टंकार बजाए,
असुर का बल नष्ट हो जाये,
पीला वस्त्र पहन कर दूध चढाये, मनवांछित फल इनसे पाये।

4.कूष्माण्डा देवी
सारे बम्हाण्ड को उत्पन्न करने वाली,
चौथे दिन आयी कूष्माण्डा हमारी,
हरा वस्त्र हैं है इनको भाये,
रोगों को तत्काल भगायें
माल पुआ का भोग लगाये
सब दुख दर्द दूहर ले जायें।

5.स्कन्द माता
पाँचवाँ रुप स्कन्द माता,
जो सेनापति स्कन्द की माता,
परम शांति और सुख की दाता,
ग्रे वस्त्र पहन कर पूजा को जाये,
केले का इनको भोग लगाये
ऐसा करके मैया प्रसन्न हो जाये, मनवांछित फल इनसे पायें।

6.कात्यायनी देवी
महर्षि कात्यायन के घर जन्मी,
आदि शक्ति जगदम्बा कहलायी,
सिंह बाहन पर करती सवारी
आरेन्ज वस्त्र इनको प्यारी,
शहद से इनको स्नान कराये, रोग, शोक, संताप सब मिट़ाये।

7.काल रात्री

काल का भी नाश कर जाये,
तभी ये काल रात्री कहलाये,
शत्रुओं को नष्ट कर जाये,
अपने भक्तों की विजय दिलाये,
वाहन इनको गधा है भाये,
सफेद वस्त्र इनको भाये,
गुड की वस्तुओं का भोग लगाये, दुख दरिद्रता दूर भगाये।

8.महागौरी
अत्यंत गोरा रंग इनने पाया,
इसलिये नाम महागौरी कहलाया,
वाहन इनका बैल की सवारी,
शाँत मनोहर मूरत प्यारी,
नारियल का भोग लगाओ,
नारियल का ही दान कर जाओ,
सफेद वस्त्र पहन मैया को पहनाओ,मन मानी मुरादें पाओ।

9.सिद्धि दात्री
मुनि जनों को अतिशय प्यारी,
सिद्धि प्रदान करने वाली,
स्काई ब्लू रंग है भाता, लावा का भोग पसंद है आता।

नौ दिन की मैया की पूजा, दसवें दिन कन्या की पूजा,
नौ दिन मैया को रिझाओ, धन धान्य से परिपूर्ण हो जाओ!!!

जिन्दगी

जिन्दगी.....
तुम बहुत खूबसूरत हो, बच्चों की मुस्कान हो।
भूखो की रोटी हो, प्यासों का पानी हो।।

निर्धन का पैसा हो,
बीमारों की दवा हो।
मजदूर की ताकत हो,
वृद्धों की लकड़ी हो।।

सृष्टि का सृजन हो,
तपती धूप में पेड की छाँव हो।
जाडे की गुनगुनी धूप हो,
सूखे की बारिस हो।।

सुहागिनो का सिन्दूर हो,
नारी की शक्ति हो।
तरूणाईयों का यौवन हो
नर्तकियों की घुँघरु हो।।

योगियों की ज्योति हो,
कवियों का भाव हो।
शिल्पियों के कल्पना हो,
ताँत्रिक की साधना हो।।

विद्यार्थियों की मेहनत हो,
सैनिकों का हौसला हो।
खिलाडियों का तमगा हो,
वीरों का झण्डा हो।।

बुढापे की आस हो,
मुसाफिरों का ठिकाना हो.
चालक की नजरें हो,
माझी की पतवार हो।।

शराबियो का मैखाना हो,
नशेड़ियों का नशा हो।
जुआरियों की बाजी हो,
चोरों की अँधेरी रात हो।।

जिन्दगी.....
पता नहीं क्या हो.....।
जो भी हो,
तुम बहुत खूबसूरत हो।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अर्चना कटारे

जन्म - 20 फरवरी 1968, सिहोर, जिला- जबलपुर (म.प्र.)

माता - श्रीमती श्यामा देवी गुप्ता

पिता - श्री वीरेन्द्र नाथ गुप्ता

पति - श्री नीरज कटारे

शिक्षा - एम.ए. (इतिहास)

पता - नीरज कटारे, जैन मंदिर के पीछे, शहडोल (म.प्र.)

मो. - 7999845204

ई मेल - achanakatare10@gmail.com

कार्यक्षेत्र - समाज की उन्नति के लिए कविताओं के माध्यम से लोगों के मन में चेतना जागृत करना।

विद्या - काव्य लेखन, भजन, कविताऐं, गद्य, संस्मरण, लघुकथा, कहानी, यात्रा वृत्तांत

प्रकाशन - अश्रु बिंदु (काव्य संग्रह)- अंतरा प्रकाशन, साझा संकलन में इंसानियत का नतीजा, धरोहर अपनो की पत्रिका में काव्य संकलन, वुमन आवाज में काव्य संकलन, स्त्री तुम सृजक एवं माँ में साझा प्रकाशन, एन.डी.टी.वी. द्वारा 'भारत माँ से प्यार करो' का प्रसारण वनिता, सरिता, गृहलक्ष्मी, गहोई बन्धु पत्रिका,
प्रयास पत्रिका में तथा दैनिक भास्कर, समय, पत्रिका, लोकजंग, अंतरा शब्द शक्ति, मातृभाषा.कॉम एवं अन्य समाचार पत्रों व इपत्रिकाओं के माध्यम से कविताऐं, लेख, लघुकथा प्रकाशित।

सम्मान - हिन्दी कलमकार सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, भाषा भारती सम्मान, शारदा सम्मान, सर्वश्रेष्ठ लेखक सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, साहित्य अक्षत सम्मान, स्टार हिन्दी बेस्ट करेंट राईटर अवार्ड, काव्य रांगोली नारी रत्न सम्मान, हिन्दी श्रेष्ठ सृजनकार सम्मान एवं सर्वश्रेष्ठ आलेख सृजन अवार्ड सम्मान तथा कई पुरस्कार एवं सम्मानों से सम्मानित ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-97-0

मूल्य- 60/-